लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय,

मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण

अमीर खुसरो का परिचय

डॉ. सन्तोष विश्नोई, सहायक प्रोफेसर,

हिन्दी विभाग

(15) टिप्पणी लिखे —

Q. अमीर खुसरो का परिचय देते हुए उनका साहित्यिक मूल्यां—

(1) अमीर खुसरो :- खड़ी बोली के प्रथम कवि के रूप में अमीर खुसरो बहुभाषागत वेद, महान् संगीतज्ञ, कुशल सैनिक और सच्चे राष्ट्रकवि प्रेम के रूप में विख्यात है। इनका वास्तविक नाम अबुल हसन यमनुद्दीन था। खुसरो का जन्म 3 मार्च 1325 ई० को उत्तरप्रदेश के एटा जनपद में स्थित पटियाला गाँव में हुआ था। खुसरो खड़ी बोली हिन्दी के साथ ब्रजभाषा में भी मौलिक लेखन का कार्य किया है। ऐसा माना जाता है कि इन्होंने लगभग 100 से अधिक ग्रंथों की रचना की जिनमें से केवल 20 या 22 ग्रंथ ही उपलब्ध हो सके है।

अमीर खुसरो का बालपन दिल्ली के आस-पास बीता था। इसलिए उनके काव्य में वहाँ कि प्रचलित खड़ी बोली के शब्द पर्याप्त में मिलते है। और इसीकारण उन्हें खड़ी बोली के प्रथम कवि की संज्ञा दी जाती है।

इसके उदाहरण - खुसरो की पहेलियाँ, सुखने, निस्बतों आदि में मिलते है।

एक उदाहरण द्रष्टव्य है —

" एक नार ने अचरज किया।
सॉंप मार पिंजड़े में जिया ॥"

अमीर खुसरो का व्यक्तित्व बहुयामी है। एक ओर वे सूफी परंपरा में आदर के साथ गिने जाते है, दूसरी ओर उनका बहुत से दरबारी

से उनका गहरा संबंध है। वे केवल साहित्यकार नहीं संगीतकार शब्दकोशकार और इतिहासकार के रूप में भी जाने जाते है। उन्होंने भारतीय ईरानी संगीत के मिश्रण से अनेक तालों और रागों का आविष्कार किया। शास्त्रीय संगीत में ख्याल परंपरा की शुरुआत का श्रेय खुसरो को ही दिया जाता है। इसके साथ उन्होंने अनेक वाद्ययंत्रों का आविष्कार किया था। विद्वानों का मानना है कि सितार, ढोलक, तबला के खोज का श्रेय खुसरो को है।

अमीर खुसरो के अधिकांश रचनाएँ फारसी भाषा में लिखित है। इसके साथ खड़ी बोली और ब्रज भाषा में भी उनकी रचनाएँ प्राप्त है। हिन्दी में खुसरो की तीन रचनाओं का उल्लेख आता है। जिनमे केवल एक खलीगबानी ही उपलब्ध है। खुसरो को हिन्दी गजल का प्रवर्तक भी माना जाता है। फारसी साहित्य में उनके पाँच दीवान तथा चौदह मनसबियाँ है। उनके प्रसिद्ध फारसी ग्रंथो में नोह सिपहर, नूर फतोह, एजाजे खुशरवी इसके अतिरिक्त खुसरो की फुटकर रचनाओं में मुकरियाँ पहेलियाँ, गीत, एनीमिलिया निरबद मिलती है। जिनके कारण हिन्दी साहित्य में उनकी ख्याति मिलती है।

उदाहरण —

"एक थाल मोती से भरा सबसे सिर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाल फिरे मोती उससे एक ना गिरे।।"

पहेली

"मेरा मुँह से श्रृंगार करावत, आगे बैठ के मान बढ़ावत।"
वासे चिक्कन नार कोई दिशा, हे सखि साजन?
ना सखि शीशा।"

"पान क्यों सड़ा?
घोड़ा क्यों अड़ा?
फेरा न था।"

अमीर खुसरो द्वारा किये गए प्रयोगों ने जन-जीवन में साहित्य एवं कला के क्षेत्र में नयी रौशनी पैदा की, उसे पर्याप्त समृद्धि प्रदान की। अहिन्दी भाषी होते हुए भी इन्होंने हिन्दी की महान सेवा की। जातीय विचारधारा की संकीर्णता को उन्होंने भाषाई एकता दूर करने का अथक प्रयास किया। "मानवीय सौमनस्य के इस कवि को भाषाओं और धर्मों की सरहदों में बाँधा नहीं जा सकता है। निजामुद्दीन औलिया के इस शिष्य का कृतित्व अपने पीर के बंधनमुक्त व्यक्तित्व की छाया में परवान चढ़कर सरल, किन्तु चमत्कार-पूर्ण हो गया।